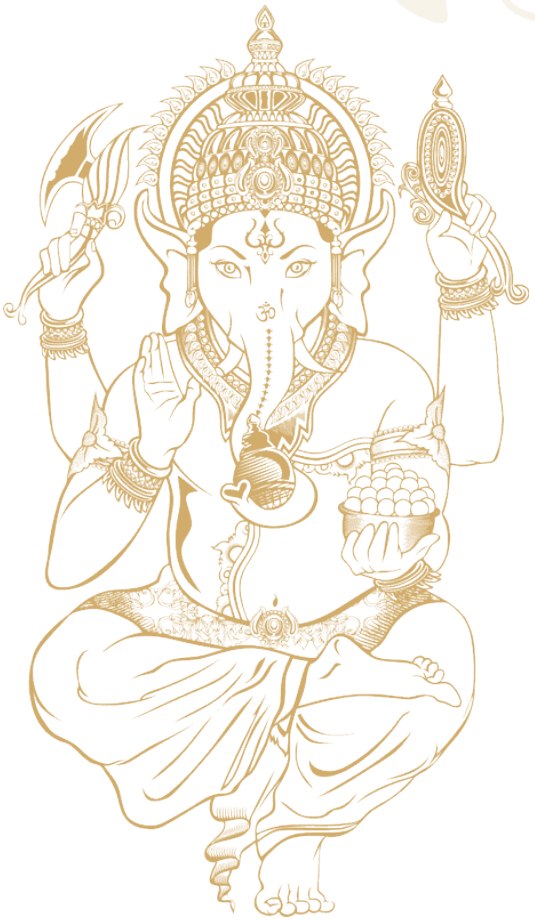

Mr.

28 Nov 2025

04:39 PM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120384501**

तिथि 28/11/2025 **समय** 16:39:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:12
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:04:39 घं
वेलान्तर	00:12:03 घं
सूर्योदय	06:34:54 घं
सूर्यास्त	17:10:37 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	8
नक्षत्र	शतभिषा
योग	हर्षण
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सी-सीताराम
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

राहु 7वर्ष 9मा 14दि

राहु

28/11/2025
13/09/2033

	00/00/0000
	00/00/0000
	28/11/2025
बुध	14/03/2026
केतु	02/04/2027
शुक्र	02/04/2030
सूर्य	24/02/2031
चन्द्र	25/08/2032
मंगल	13/09/2033

योगिनी

धान्या 1वर्ष 3मा 17दि

धान्या

28/11/2025
17/03/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	28/11/2025
सिद्धा	17/04/2026
संकटा	16/12/2026
मंगला	16/01/2027
पिंगला	17/03/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:51:35	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	---	0:00			
सूर्य			12:14:30	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	मित्र राशि	1.24	मातृ	पितृ	विपत
चंद्र			14:13:45	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	सम राशि	1.10	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	23:11:23	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	चंद्र	स्वराशि	1.01	अमात्य	भ्रातृ	क्षेम
बुध	व		26:38:13	तुला	विशाखा	2	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.03	आत्मा	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		00:27:55	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	चंद्र	उच्च राशि	1.13	कलत्र	धन	सम्पत
शुक्र			02:46:39	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.19	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि			00:56:16	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.22	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु			20:07:14	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			20:07:14	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

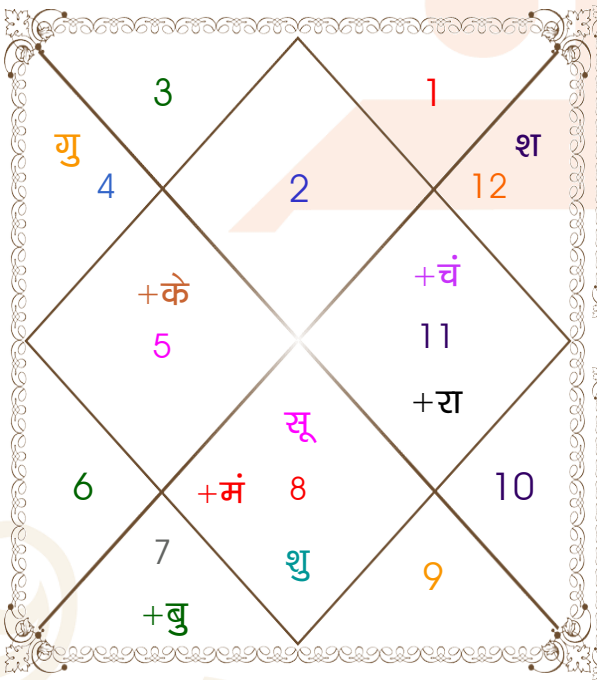

चन्द्र कुंडली

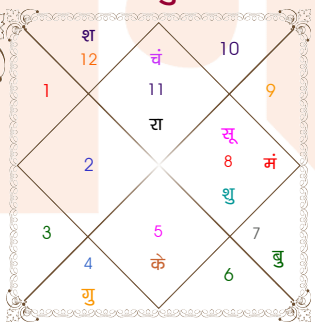

नवमांश कुंडली

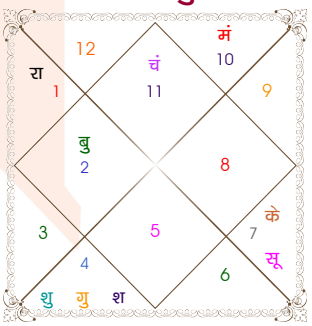

सर्वाष्टकवर्ग

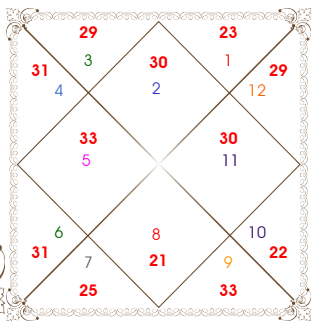

दशमांश कुंडली

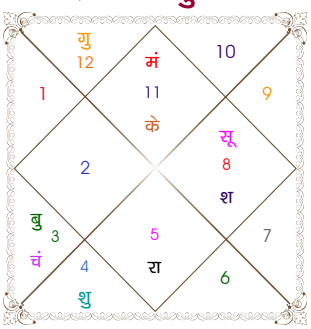

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, नाड़ी आद्य, योनि अश्व तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सि" या "सी" अक्षर से होगा।

आपको ठंड से व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसे सहन करने में आप असमर्थ रहेंगे। आप प्रारम्भ से ही अत्यधिक साहस से युक्त रहेंगे एवं अपने सांसारिक कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। आपके साहस को देखकर अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक दक्ष पुरूष होंगे तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अति चतुराई से सम्पन्न करेंगे। समाज में आप का यथोचित आदर एवं सम्मान रहेगा। इसके अतिरिक्त शत्रुओं का नाश करने में आप सफल रहेंगे तथा उनके ऊपर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्र के प्रति आप की रूचि एवं श्रद्धा रहेगी। साथ ही इस विषय का आपको अच्छा ज्ञान भी रहेगा। आप स्वभाव से ही शान्त होंगे एवं उग्र तथा हिंसक प्रवृतियों का आप में अभाव रहेगा। आप थोड़ी मात्रा में भोजन करना पसन्द करेंगे तथा इससे आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आप विपुल धन से सर्वथा युक्त रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में आपकी ख्याति रहेगी लेकिन आप की प्रवृति कंजूसी से युक्त होगी। अतः आप खुलकर व्यय करने में असमर्थ रहेंगे एवं धन संचय के प्रति ही आप अधिक प्रयत्नशील रहेंगे। महिलावर्ग से भी आपके मित्रता पूर्ण संबंध होंगे तथा अवसरानुकूल उनकी सेवा तथा सहयोग के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप घर से दूर परदेश या विदेशों में प्रायः भ्रमण करेंगे एवं अपना अधिकांश समय घर से बाहर ही व्यतीत करेंगे। इसके साथ ही कामचेष्टा की प्रवलता भी आप में रहेगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।

जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप स्पष्टवादी होंगे तथा जो कुछ भी आप कहना चाहेंगे स्पष्ट रूप से अन्य लोगों के समक्ष कहेंगे। इससे समाज में कुछ लोग आपसे प्रसन्न तथा कुछ लोग रूष्ट रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के व्यसनों के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी अतः जीवन में इनका उपभोग भी आप करते रहेंगे। आप एक दुराग्रही व्यक्ति भी होंगे तथा अपनी ही बात को हमेशा मनवाने का प्रयत्न करेंगे।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका उन्नत रहेगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत रहेगे। साथ ही हाथ, पैर एवं कटिभाग भी स्थूलता से युक्त रहेगे। आपके शरीर में रूक्षता भी रहेगी परन्तु इससे आपके सौन्दर्य एवं आकर्षण में कोई कमी नही आएगी। आप में विद्रोह की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर इस भावना का आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप स्वभाव से ही उग्र भी रहेंगे तथा कभी कभी अकारण ही उत्तेजित भी हो जाया करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा का भाव विद्यमान रहेगा। आप एक आलसी पुरूष भी होंगे तथा यदा कदा स्वभाविक दुष्टता का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। शिल्प विद्या एवं चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप

विशेष योग्यता एवं ख्याति अर्जित करने में सफल हो सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप समय पर मानसिक कष्टानुभूति से व्याकुलता का अहसास भी करेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विविध प्रकार के शास्त्रों का आप परिश्रम पूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी आप रूचिशील तथा निपुण रहेंगे। आप शान्तिप्रिय व्यक्ति होंगे लेकिन शत्रुओं को पराजित करने में सर्वथा सफल रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से कनरकर्मों को सम्पन्न करेंगे या अप्रत्यक्ष रूप से इनमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी रूचि भ्रमण एवं यात्रा के प्रति प्रारम्भ से ही रहेगी तथा आपका अधिकांश समय घूमने फिरने तथा यात्रादि करने में ही व्यतीत होगा। धन के प्रति आपमें लालच का भाव रहेगा एवं दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में व्याप्त रहेगी एवं इसके लिए यत्नशील भी रहेंगे। आप की आर्थिक स्थिति सदैव विषमता से युक्त रहेगी। इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन करने तथा सुगन्धित पुष्पों के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं इनका आप प्रायः उपयोग करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा समाज में आपकी पूर्ण ख्याति रहेगी लेकिन अन्य विद्वानों को आप पूर्ण सम्मान प्रदान नहीं करेंगे जिसे लोग अच्छा नहीं समझेंगे अतः इससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी। साथ ही कभी अन्य लोगों से आपकप व्यवहार भी अच्छा ही रहेगा।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन में सामान्यतया सफलता तथा विजय प्राप्त करते रहेंगे एवं आचरण से हमेशा श्रेष्ठ रहने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। धनैश्वर्य से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समय समय पर आप

इनकी सेवा करने तथा सहयोग प्रदान करने के लिए आप सदैव तत्पर तथा प्रयत्नशील रहेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार के सद्गुणों से आप युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन की लम्बाई अधिक होगी एवं नसे भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होती रहेगी। वातजन्य रोगों से विशेषतः आपको सुरक्षा रखनी चाहिए। महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे। साथ ही मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह एवं प्रेम का भाव रहेगा तथा उनके सहायता तथा सहयोग के लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

दानशीलता की प्रवृति से आप प्रारम्भ से ही युक्त रहेंगे तथा यत्नपूर्वक जीवन में अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप में कृतज्ञता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से भी युक्त रहेंगे तथा जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर रहेंगी एवं बुद्धि भी सरलता के गुण से सुशोभित रहेगी अतः आप किसी भी व्यक्ति के प्रति धोखा या प्रपंचादि की प्रवृति अपने मन में नहीं रखेंगे। इस प्रकार अपने प्रेमी स्वभाव तथा सत्कार्यों के द्वारा आप समाज के सभी वर्गो में लोकप्रियता अर्जित करेंगे एवं स्वभुजबल से धनार्जन करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की होगी साथ ही आप में दया तथा करूणा के भाव की भी अल्पता विद्यमान रहेगी परन्तु आप एक साहसी पुरूष होंगे अतः अपने अधिकांश कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपकी प्रवृति में

क्रोध की भी प्रवलता रहेगी एवं समय समय पर कभी अकारण ही इस प्रवृति का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप विवाद आदि करने में भी तत्पर होंगे एवं समाज में किसी न किसी से आपका विवाद चलता रहेगा। साथ ही शारीरिक बल की आप में पूर्णता रहेगी।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका स्वरूप भी आकर्षक रहेगा। परन्तु आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कठोर शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग तथा श्रोता आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रप्रिय व्यक्ति होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वच्छन्दता पूर्वक करना पसन्द करेंगे। इनमें बाह्य हस्तक्षेप या दवाब आपको रूचिकर नहीं लगेगा। आप सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे अतः आपके अधिकांश सांसारिक कार्यकलाप साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप में तेजस्विता का भाव भी रहेगा जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। वीणा या ऐसे ही वाद्य मंत्रो के प्रति आपकी रूचि रहेगी एवं इनके वादन में आप दक्ष रहेंगे। इसके साथ ही आप एक विश्वासी व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों का आपके ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए चैत्रमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, गण्डयोग, आर्द्रा नक्षत्र तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता

प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल अदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं अनिष्ट प्रभाव समाप्त होंगे तथा सर्वत्र शुभ एवं लाभमार्ग प्रशस्थ होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।